स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा - तृतीय खण्ड
(अष्टम पत्र - साहित्य सिद्धांत एवं हिन्दी आलोचना)
खण्ड (ख) पाश्चात्य साहित्य चिंतन - मिथक

- डॉ० मुन्ना साहू
हिन्दी विभाग
जे० के० कॉलेज

मिथक शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'मिथ' शब्द से हुई है। मिथ में 'क' प्रत्यय जोड़कर 'मिथक' का निर्माण हुआ। संस्कृत में मिथ से दो अर्थ प्रकट होते हैं। एक तत्वका ज्ञान के लिए, दूसरा दो तत्वों के परस्पर मेल मिलाप के लिए।

'मिथक' शब्द अंग्रेजी के 'मिथ' (Myth) शब्द से हिन्दी में लिया गया है, ऐसा भी मान्यता है 'मिथ' शब्द का उद्भव के संदर्भ में दूसरी मान्यता यूनानी शब्द 'मिथॉस' (Mythos) से भी है जिसका अर्थ है 'मुँह से निकला हुआ'। अर्थात् उसका संबंध 'मौखिक कथा' से जुड़ गया। क्योंकि कथा भी लोकप्रचलित सुनी सुनायी जाती है।

हिन्दी में मिथक के लिए पुरावृत्त, पुराकथा, कल्पकथा, दैवकथा, धर्मकथा, पुराजकथा, पुराख्यान आदि अनेक शब्द प्रयुक्त होते रहे हैं। "मिथक एक कथा है, जिसमें सृष्टि और उसके उपकरणों के उद्भव, उनकी गतिक्रिया और उस पर नियंत्रण, उसके अबूझ व्यापार, मूलभूत मानवीय क्रियाओं और समस्याओं, प्रतिरूपों और तत्वों, जीवन-मरण आदि विहंगम विषयों को लेकर आरंभ कालीन धारणाएं, चिंताएं, विश्वास और तत्संबंधी कर्मकाण्ड को अभिव्यक्ति मिली है।"

मिथक किसी भी संस्कृति की समझ और पहचान के लिए उपादेय हो सकते हैं, क्योंकि इनमें ज्ञानेंद्रियों के जटिल और वैविध्यपूर्ण भाव अनुभव-पुंज निहित है। मानव समाज और उसके विकास के अध्ययन में मिथकों का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। मिथकों को सामान्यतः तीन भागों में बांटा जा सकता है - ① सृष्टि संबंधी मिथक ② प्रलय संबंधी मिथक ③ देवताओं के प्रणयाचार संबंधी मिथक।

महाप्रलय और उससे बचे मनु की कथा तथा उनकी नाव की आदिम कथा सभी जातियों के प्राचीन साहित्य में नोह या नूह और उसकी नाव की कथा के रूप में वर्णित है। यह कथा मिथक के रूप में विद्यमान है।

देवताओं के प्रणयाचार संबंधी मिथकों का संबंध प्रकृति के मूल या आदि तत्वों के प्रणय व्यापार से है। भारतीय पुराणों में वर्णित देवताओं के प्रणय-विवाह आदि से संबंधित मिथक इसके अंतर्गत आ सकते हैं - जैसे - ब्रह्म-माला, विष्णु-लक्ष्मी, शिव-शक्ति आदि। (1)

(1) हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, पृ० 283)

Scanned with CamScanner